

Padma Shri



PROF. DAVID R. SYIEMLIEH

Prof. David R. Syiemlieh is a scholar of history and culture of North East and former Chairman of UPSC.

2. Born on 22nd January 1953 in Mutrapore, Sibsagar, Assam, Prof. Syiemlieh graduated with Honours in History in 1974 from St. Edmund's College, Shillong. This was followed with an M. Phil in 1980 and Ph.D in 1985 from the North-Eastern Hill University. He taught in St. Edmund's College (1977-1979) and NEHU (1979-2012) where he held several responsible positions including Dean Students' Welfare; Head, Department of History; Controller of Examinations; officiated as Registrar and held the position of Pro- Vice-Chancellor. He was appointed Vice-Chancellor of Rajiv Gandhi University, Arunachal Pradesh in October 2011. He joined as Member, Union Public Service Commission in 2012 and in 2017 he was appointed Chairman UPSC.

3. Prof. Syiemlieh's first book British Administration in Meghalaya: Policy and Pattern, Heritage Publishers, New Delhi, 1989 established him as a scholar grounded in the history and culture of Meghalaya and the North East. This was followed by Survey of Research in History on North East India 1970-1990 and an edited volume with J. B. Bhattacharjee, Early States in North East India. His more recent publications are On the Edge of Empire: Four British Plans for North East India and Layers of History: Essays on the Khasi-Jaintias, a collection of 17 articles on the history and culture of the Khasi-Jaintias of Meghalaya. He coordinated the research, editing and publication of Meghalaya at Fifty 1972-2022, launched on 21 January 2022 on the fiftieth anniversary of the foundation of the State of Meghalaya. He is credited with researching and discovering the date of death and other details of the last days of U Tirot Sing, the Syiem/chief of Nongkhlawhima/state in the Khasi hills, Meghalaya, who took a leading role in resisting British expansion into the Khasi hills and died while under house arrest as a state prisoner on 17 July 1835. The day is annually observed in Meghalaya as a State holiday to commemorate the life, sacrifice and patriotism of this little known freedom fighter.

4. Prof. Syiemlieh has received a number of scholarships/fellowships including a Government of India Post Graduate Scholarship; Senior Fulbright Fellowship for research in USA; Charles Wallace Grant for research in UK and Indo-France Cultural Exchange Grant for research in Paris. He was elected President, NEIHA in 2010-2011. He was Council Member for two terms of the Indian Council of Historical Research, New Delhi. He was Council Member of the Indian Council of Social Science Research, New Delhi for a term. He was elected President of the Modern India Section, Indian History Congress at its 73rd session, Bombay University in January 2013. He is on the academic council and board of management of several universities. In his continued support of education and literature he is Adviser, Meghalaya State Education Commission, Government of Meghalaya.



प्रो. डेविड आर. सिएम्ले

प्रो. डेविड आर. सिएम्ले, उत्तर पूर्व के इतिहास और संस्कृति के विद्वान तथा यूपीएससी के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं।

2. 22 जनवरी 1953 को मुतरापुर, शिवसागर, असम में जन्मे, प्रो. सिएम्ले ने वर्ष 1974 में सेंट एडमंड महाविद्यालय, शिलांग से इतिहास ऑनर्स में स्नातक किया। इसके उपरांत, इन्होंने वर्ष 1980 में एम. फिल और वर्ष 1985 में नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। प्रो. सिएम्ले ने सेंट एडमंड महाविद्यालय (वर्ष 1977-1979) और एनईएचयू (वर्ष 1979-2012) में अध्यापन कार्य किया, जहाँ इन्होंने डीन, स्टूडेंट्स वेलफेयर; इतिहास विभागाध्यक्ष; परीक्षा नियंत्रक सहित कई उत्तरदायी पदों पर कार्य किया; रजिस्ट्रार का कार्यभार संभाला और प्रति-कुलपति के पद पर रहे। इन्हें अक्टूबर 2011 में राजीव गांधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश का कुलपति नियुक्त किया गया। वे वर्ष 2012 में संघ लोक सेवा आयोग के सदस्य बने और वर्ष 2017 में उन्हें यूपीएससी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

3. प्रो. सिएम्ले की पहली पुस्तक ब्रिटिश एडमिनिस्ट्रेशन इन मेघालय: पॉलिसी एंड पैटर्न, हेरिटेज पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1989 ने इन्हें मेघालय एवं उत्तर पूर्व के इतिहास और संस्कृति में विद्वान के रूप में स्थापित किया। इसके उपरांत सर्वे ऑफ रिसर्च इन हिस्ट्री ऑन नॉर्थ ईस्ट इंडिया 1970-1990 और जेबी भट्टाचार्य के साथ संपादित खंड, अर्ली स्टेट्स इन नॉर्थ ईस्ट इंडिया प्रकाशित हुए। उनकी हालिया प्रकाशित पुस्तकें हैं ऑन द एज ऑफ एम्पायर: फोर ब्रिटिश प्लान्स फॉर नॉर्थ ईस्ट इंडिया और लेयर्स ऑफ हिस्ट्री: एसेज ऑन द खासी-जयंतियास, जो मेघालय के खासी-जयंतिया के इतिहास और संस्कृति पर 17 लेखों का संग्रह है। इन्होंने मेघालय एट फिफ्टी 1972-2022 के शोध, संपादन और प्रकाशन के समन्वय का कार्य किया, जिसका लोकार्पण मेघालय राज्य की स्थापना की पचासवीं वर्षगांठ पर 21 जनवरी 2022 को किया गया। मेघालय के खासी पहाड़ियों में नोंगखलावहिमा/राज्य के सियेम/ प्रमुख यू तिरोत सिंग, जिन्होंने खासी पहाड़ियों में ब्रिटिश विस्तार का विरोध करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी और 17 जुलाई 1835 को राज्य कैदी के रूप में घर में नजरबंद रहते हुए उनकी मृत्यु हो गई थी। उनकी मृत्यु की तारीख और अंतिम दिनों के अन्य विवरणों पर शोध और खोज करने का श्रेय प्रो. सिएम्ले को दिया जाता है। इस अल्पज्ञात स्वतंत्रता सेनानी के जीवन, बलिदान और देशभक्ति की स्मृति में मेघालय में प्रतिवर्ष इस दिन को राजकीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है।

4. प्रो. सिएम्ले को कई छात्रवृत्तियाँ/फेलोशिप मिली हैं जिनमें भारत सरकार की स्नातकोत्तर छात्रवृत्ति; यूएसए में शोध के लिए सीनियर फुलब्राइट फेलोशिप; यूके में शोध के लिए चार्ल्स वालेस ग्रांट और पेरिस में शोध के लिए भारत-फ्रांस सांस्कृतिक विनिमय ग्रांट शामिल हैं। वह वर्ष 2010-2011 में एनईआईएचए के अध्यक्ष चुने गए। वह दो टर्म तक भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के परिषद सदस्य और एक टर्म के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के परिषद सदस्य थे। वह जनवरी 2013 में बॉम्बे विश्वविद्यालय में भारतीय इतिहास कांग्रेस के 73वें सत्र में आधुनिक भारत खंड के अध्यक्ष चुने गए। वह कई विश्वविद्यालयों की शैक्षणिक परिषद और प्रबंधन बोर्ड में शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में निरंतर सहायता प्रदान करने के लिए, वह मेघालय सरकार के मेघालय राज्य शिक्षा आयोग के सलाहकार हैं।